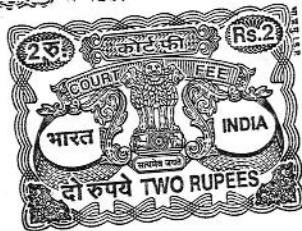


न्यायालय राजस्व मण्डल म.प्र. गवालियर

पुनर्विलोकन क्र. / 2015

बट्टा - 3336-१०१२/१५



1. विनय राजपाल पुत्र श्री अमरलाल  
राजपाल
2. रवि राजपाल पुत्र श्री मोतीलाल राजपाल  
निवासीगण यादव कालोनी नाका  
चन्द्रबदनी लश्कर गवालियर म.प्र.  
-----आवेदकगण

दिनांक 13-10-15

क्र. श्री विनय राजपाल  
मामूल काट छातुत/

13-10-15  
50

विरुद्ध

1. लखनलाल पुत्र श्री कैलाश नारायण  
निवासी रोशनीघर लश्कर गवालियर
2. जोसफ पिन्टू प्रकाश प्रकाश पुत्र श्री नोवर्ट  
प्रकाश निवासी चर्च गेट के पास फालका  
बाजार लश्कर गवालियर म.प्र.

-----अनावेदक

माननीय अयक्ष महोदय द्वारा पुनरीक्षण प्रकरण क्र.  
1347-i/2004 में पारित आदेश दिनांक 11-08-2015  
के विरुद्ध मध्य प्रदेश भू राजस्व संहिता, 1959 की  
धारा 51 के अधीन पुनर्विलोकन

अनोद्ध आगे बढ़  
१३४७-१०१२  
गवालियर  
13-10-2015

*[Signature]*

राजस्व मण्डल, मध्यप्रदेश, ग्वालियर  
आवृत्ति आदेश पृष्ठ

प्रकरण क्रमांक रिव्यू 3336—पीबीआर / 2015

जिला ग्वालियर

राजस्व क्रमांक रिव्यू 3336—पीबीआर / 2015	कार्यवाही तथा आदेश	जिला ग्वालियर
राजस्व क्रमांक रिव्यू 3336—पीबीआर / 2015	कार्यवाही तथा आदेश	पक्षकारों एवं अभिभाषकों आदि के हस्ताक्षर
7-1-2016	<p>आवेदकगण के विद्वान अभिभाषक द्वारा ग्राहयता पर प्रस्तुत तर्कों पर विचार किया गया। इस न्यायालय के आदेश दिनांक 11-8-2015 की सत्यप्रतिलिपि का अवलोकन किया गया। म0 प्र0 भू-राजस्व संहिता 1959 की धारा 51 सहपठित व्यवहार प्रक्रिया संहिता के आदेश 47 नियम 1 में पुनर्विलोकन हेतु निम्नलिखित आधारों का उल्लेख किया गया है:-</p> <ol style="list-style-type: none"> <li>1 किसी नई और महत्वपूर्ण बात या साक्ष्य का पता चलना जो सम्यक् तत्परता के पश्चात भी उस समय जब आदेश किया गया था, उस पक्षकार के ज्ञान में नहीं थी अथवा उसके द्वारा पेश नहीं की जा सकती थी, या</li> <li>2 मामले के अभिलेख से ही प्रकट कोई भूल या गलती, या</li> <li>3 कोई अन्य पर्याप्त कारण</li> </ol> <p>आवेदकगण की ओर से पुनर्विलोकन आवेदन पत्र में ऐसी कोई बात अथवा साक्ष्य नहीं दर्शायी गयी है, जो आदेश पारित करते समय उसकी जानकारी में नहीं थी, अथवा प्रस्तुत नहीं की जा सकती थी। अभिलेख से परिलक्षित कोई त्रुटि भी नहीं दर्शाई गई है, केवल इस न्यायालय द्वारा निकाले गये निष्कर्षों में त्रुटि बतलाने का प्रयास किया गया है, जो पुनर्विलोकन का आधार नहीं है।</p> <p>2/ उपरोक्त विश्लेषण के परिप्रेक्ष्य में यह पुनर्विलोकन प्रथम दृष्टया आधारहीन होने से अग्राह्य किया जाता है।</p> <p><i>[Signature]</i></p> <p>(मनोज गोयल)</p> <p>अध्यक्ष</p>	